VICTORY OF GOOD OVER EVIL

SPECTRUM

(110TH EDITION SEPT- NOV 2021)

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL
PASCHIM VIHAR-63

KNOWLEDGE THY WEALTH

SPECTRUM

Of the Neonians!
By the Neonians!
For the Neonians!

They say India is one of the most youthful countries in the world. This despite the fact that we have a long history and a deep-rooted culture. A paradox - you might think; but it is this very paradox that makes us so unique. Our strong foundation makes us hopeful that we will inevitably branch out with new leaves of hope, zeal, progress and prosperity. However we cannot overlook the struggles that lie in our country's path to development. At a time when the country is going through civil turbulence in the form of protests and a continuous conflict of ideologies I think, we the youth, have to take the baton in our hands to promote faith in our values, hope in our system, patriotism in our hearts and above all love for the nation. A will to serve our parents, our school, our society and our nation is what true patriotism comprises of. The power of youth is definitely the driving force, most significant for the growth of our country.

TEACHER FACILITATORS

Mr. Jagmohan Sharma, Ms. Kanchan Bhagat
Ms. Santosh, Ms. Surbhi Hajela,
Mr. Mayank Grover

NEO- FAMILY

Proudly Congratulates

HEMANT KUMAR

EX- NEONIAN- BATCH- 2013-14

FOR

Clearing Civil Services Competitive Exam- 2020-21

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL

QUALIFIED NEET EXAM- 2020-21

AYUSH KUMAR JHA

PARNEET SINGH

MANREET SINGH

BINWANT KAUR

NEO- FAMILY

Proudly Congratulates you

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL

QUALIFIED JEE (MAIN)- 2020-21

LOVEPREET SINGH

MONEY

SUKHDEEP SINGH

INDERPAL SINGH

NEO- FAMILY

Proudly Congratulates you

UNIFIED INTERNATIONAL ENGLISH OLYMPIAD

Certificate of Appreciation

UIEO Unified International English Olympiad

This certificate is awarded to

HARDIK GD SARDANA

a student of NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL

class 2 H.T.No. 8608A021

by

UNIFIED COUNCIL

Foundation for success

in appreciation of his/her excellent performance in the

Unified International English Olympiad

held in the academic year **2020-21**. He/She has secured **30** rank

at the **National** Level

Congratulations! You are at Rank 30 of the top 100 National Achievers of your class in UIEO-2020.

UNIFIED COUNCIL
INDIA'S 1ST ISO 9001:2015 Certified Organisation in Testing & Assessment
www.unifiedcouncil.com

R608

(K. S. VAS)
Director

HAPPY JANMASHTAMI

NUMBER ARRAY

Numbers, numbers,
You will find them everywhere,
Also in the Number Mansion,
Come on, let's go there!

One is the first fully positive number,
Two pillows needed for our slumber.
Three sides in a Bingo Mad Angle,
Four ropes can make us tangle.
Five points in a star!

Six spots on a face of a dice,
Seven colours make a rainbow nice.
Eight arms of an octopus,
Nine passengers are in a bus,
Ten, the first in the tens place!

One, two, three, four, five,
Numbers make us feel alive.
Six, seven, eight, nine, ten,
Numbers will make you brighten!

WRITTEN BY SIDDHANT SARNA- IV-C

ME AND MY MOTHER

She is my mother,
The most beautiful in the world,
Her hair are always,
So charmingly curled.
She is my mother,
She enjoys the sunny weather,
We go to the park,
We always have a talk.
When I make a mess,
She scolds me a little,
When I come back with a clean school dress,
She claps for me a lot.
She cooks healthy food,
She is always in a good mood,
She takes care of the brood,
Her acts are always kind and good.
My mother is very cute,
She says that I am too,
When I want to play with her,
She says “Peek-a boo”!
She loves everyone in my family,
She listens to everyone calmly,
She helps me in my studies,
She plays with my animal buddies.
She was born in 1980,
Last year she turned forty,
She has a lot of talents,
No one to her is equivalent
She is my mother,
The most beautiful in the world,
Her hair are always,
So charmingly curled.

WRITTEN BY SIDDHANT SARNA- IV-C

HAPPY TEACHERS' DAY
HAPPY TEACHERS DAY
5th SEP
HAPPY TEACHER'S DAY
HAPPY TEACHER DAY
THANK YOU

WE INDIANS:
THE WARRIORS OF COVID

We Indians are the warriors of COVID,
Whose picture in our mind is really vivid?

Lockdown is not a prison,
Fighting COVID is our mission.
I know it will take a little time,
But at last we will surely shine.
I know that COVID is a sudden freak,
But we Indians were never weak.

As we Indians are the warriors of COVID,
Whose picture in our mind is really vivid?

As the evil Corona is outside,
It is going to be a tough fight.
The little virus is a major trouble,
But we will pop it like a bubble.
The little virus is invisible,
But soon it will be demisable.

As we Indians are the warriors of COVID,
Whose picture in our mind is really vivid?

COVID is like our foe,
Who is putting the whole world in woe?
But there are warriors, who take the pain,
So that Indians and India gain.
There are people, who are becoming carriers,
But they should help and support the warriors.

As we Indians are the warriors of COVID,
Whose picture in our mind is really vivid?

Don't let the graph of cases go tall,
Don't go to mall or cinema hall.
Indulge in some physical activity,
In order to build your immunity.
It's we, who can save our nation,
By staying home and self-isolation.

As we Indians are the warriors of COVID,
Whose picture in our mind is really vivid?

DEV KHERA- IX-A

ये सपने मेरे

मैं आज भी कविता सुनाऊँगी, और आप लोग फिर सुनेंगें।
सिर्फ कुछ ही समझेगे जज़बात, बाकि सब तो सिर्फ वाह–वाह करेंगे।
कुछ के लिए जानी है, तो कुछ के लिए अनजानी सी।
जब आप लोग सुनेगें, तो कहेंगें, यही तो है मेरी कहानी भी।
दिल में दबे कुछ सपने हैं, कुछ बेगाने, कुछ अपने हैं।
कुछ करने की एक चाहत है, बिन मेहनत के न राहत है।
अँगारों में शरीर तापवाना हैं, अगर नाम अखबारों में छपवाना हैं।
थोड़ी मेहनत कर लो साहब, ये सपने ही तो अपने हैं।
सपनों की खातिर पढ़ना है, हर कदम पर आगे बढ़ना है।
इन सपनों की राहों पर, इन मंज़िल के चौराहों पर।
ये दुनिया मतलबी है यारों, पत्थर फैकेंगी बाहों पर।
अगर तानें इनके सहने हैं, तो नाम अखबारों में रहने है।
ठहर ज़रा और कह खुद से, दिल में दबे कुछ सपने है जो मुझे
पूरे करने है। सपने हैं आसमाँ छूने के, पर पाँव ज़मी पर भी रखने हैं।
सपने देखें हैं कुछ मैंने, जिन्हें जी–जान लगाकर पूरा करना हैं।
स्कूल की पढ़ाई है, और यारों की यारी भी।
अटेंडेंस का टेंशन हैं, और नोट्स के लिए मारा–मारी भी।
रिजल्ट को कैसे भूल सकते है यारों,
वही तो है साल भर की कमाई भी।
अभी पापा को शाल और मम्मी को बनारसी साड़ी दिलवानी है।
बहन को करीना वाला लहँगा और भाई को घूम
वाली बाइक की चाबी भी तो दिलवानी है।
अभी तो ख्वाहिशों की लंबी लिस्ट बनानी हैं,
तभी तो टूटते तारे को देख न जाने कितनी मिनन्ते माँगी है।
जिंदगी एक खूबसूरत सा सवाल है, जिसके न जाने
कितने जवाब ढूँढ़ना अभी बाकी है।
जिंदगी एक सपना है और न जानें कितने सपने अभी बाकी है!!!!!!

आरूशी– दसवीं ब

पंचरत्न

महर्षि कपिल प्रतिदिन पैदल अपने आश्रम से गंगा स्नान के लिए जाया करते थे। मार्ग में एक छोटा सा गाँव पड़ता था। जहाँ पर कई किसान परिवार रहा करते थे। जिस मार्ग से महर्षि गंगा स्नान के लिए जाया करते थे, उसी मार्ग में एक विधवा ब्राह्मणी की कुटिया भी पड़ती थी। महर्षि जब भी उस मार्ग से गुजरते, ब्राह्मणी या तो चरखा कातते मिलती या फिर धान कूटते। एक दिन विचलित होकर महर्षि ने ब्राह्मणी से इसका कारण पूछ ही लिया। पूछने पर पता चला कि ब्राह्मणी के घर में उसके पति के अलावा आजीविका चलाने वाला कोई न था। अब पति की मृत्यु के बाद पूरे परिवार के भरण–पोषण की ज़िम्मेदारी उसी पर आ गई थी। कपिल मुनि को ब्राह्मणी की इस अवस्था पर दया आ गई और उन्होंने ब्राह्मणी के पास जाकर कहा, "भद्रे! मैं पास ही के आश्रम का कुलपति कपिल हूँ। मेरे शिष्य राज–परिवारों से हैं। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी आजीविका की कोई स्थाई व्यवस्था करवा सकता हूँ, मुझसे तुम्हारी यह असहाय अवस्था देखी नहीं जाती। ब्राह्मणी ने हाथ जोड़कर महर्षि का आभार व्यक्त किया और कहा, "मुनिवर, आपकी इस दयालुता के लिए मैं आपकी आभारी हूँ लेकिन आपने मुझे पहचानने में थोड़ी भूल की है। न तो मैं असहाय हूँ और न ही निर्धन। आपने शायद देखा नहीं कि मेरे पास ऐसे पाँच रत्न हैं जिनसे अगर मैं चाहूँ तो खुद राजा जैसा जीवन यापन कर सकती हूँ, लेकिन मैंने अभी तक उनकी आवश्यकता अनुभव नहीं की, इसलिए वे पाँच रत्न मेरे पास सुरक्षित रखे हैं।

कपिल मुनि विधवा ब्राह्मणी की बात सुनकर आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने कहा, "भद्रे! अगर आप अनुचित न समझे तो आपके वे पाँच बहुमूल्य रत्न मुझे भी दिखाएँ। देखूँ तो आपके पास कैसे बहुमूल्य रत्न है? ब्राह्मणी ने आसन बिछा दिया और कहा, "मुनिवर आप थोड़ी देर बैठें, मैं अभी आपको मेरे रत्न दिखाती हूँ। इतना कहकर ब्राह्मणी फिर से चरखा कातने लगी। थोड़ी देर में ब्राह्मणी के पाँच पुत्र विद्यालय से लौटकर आए। उन्होंने आकर महर्षि और माँ के पैर छुए और कहा, "माँ! हमने आज भी किसी से झूठ नहीं बोला, किसी को कटु वचन नहीं कहे, गुरुदेव ने जो सिखाया और बताया उसे परिश्रमपूर्वक पूरा किया है। महर्षि कपिल को और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उन्होंने ब्राह्मणी को प्रणाम कर कहा, "भद्रे! वाकई में तुम्हारे पास अति बहुमूल्य रत्न है, ऐसे अनुशासित बच्चे जिस घर में हो, जिस देश में हो उसे चिंता करने की आवश्यकता ही नहीं हैं।

DIWALI CELEBRATION

अथ सप्तदशोऽध्यायः – श्रद्धात्रयविभागयोग
श्रद्धा का और शास्त्र विपरीत घोर तप करने वालों का विषय

हमने सोलहवें अध्याय में जाना कि सुर–असुर संपति क्या है ? किस प्रकार हम परमगति को प्राप्त करते हैं। हमें काम, क्रोध व लोभ को त्याग देना चाहिए। हमें सदैव शास्त्रविधि से नियत ही कर्म करने चाहिए। आज हम सत्रहवें अध्याय के बारे में जानेंगे।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा – हे माधव! जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से युक्त हुए देवादि का पूजन करते हैं, उनकी स्थिति फिर कौन–सी है ? सात्विकी है या राजसी कि तामसी ? तब श्रीकृष्ण बोले – हे अर्जुन! मनुष्यों की वह शास्त्रीय संस्कारों से रहित केवल स्वभाव से उत्पन्न श्रद्धा सात्विकी और राजसी तथा तामसी – ऐसे तीनों प्रकार की होती है। उसे मैं तुम्हें बताता हूँ। हे भारत! सभी मनुष्यों की श्रद्धा उनके अन्तःकरण के अनुरूप होती है। यह मनुष्य श्रद्धामय हैं, इसलिए जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है। सात्विक पुरुष देवों को पूजते हैं, राजस पुरुष यक्ष और राक्षसों को तथा अन्य जो तामस पुरुष है, वे प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं। जो मनुष्य शास्त्र विधि से रहित केवल मनः कल्पित घोर तप को तपते हैं तथा दंभ और अहंकार से युक्त एवं कामना, आसक्ति और बल के अभिमान से भी युक्त है। जो शरीर रूप से स्थित भूत समुदाय को और अन्तःकरण में स्थित मुझ परमात्मा को भी कृश करने वाले हैं, उन अज्ञानियों को तुम आसुर स्वभाव वाले जान। भोजन भी सबको अपनी–अपनी प्रकृति के अनुसार तीन प्रकार का प्रिय होता है और वैसे ही यज्ञ, तप और दान भी तीन–तीन प्रकार के होते हैं। उनके इस पृथक–पृथक भेद को तुम्हें मैं बताता हूँ।

आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय ऐसे आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ सात्विक पुरुष को प्रिय होते हैं। कड़वे, खट्टे, लावणयुक्त, बहुत गरम, तीखे, रुखे, दाहकारक और दुःख चिंता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ राजस पुरुष को प्रिय होते हैं। जो भोजन अधपका, रसरहित, दुर्गन्धयुक्त, बासी और अपवित्र है, वह भोजन तामस पुरुष को प्रिय होता है।

जो पुरुष विधि से नियत, यज्ञ करना ही कर्तव्य है – इस प्रकार मन को समाधान करके फल न चाहने वाले पुरुषों द्वारा किया जाता है, वह सात्विक है। परंतु हे अर्जुन! केवल दंभाचरण के लिए अथवा फल को भी दृष्टि में रखकर जो यज्ञ किया जाता है, उस यज्ञ को राजस मान। शास्त्रविधि से हीन, अन्नदान से रहित, बिना मंत्रों के, बिना दक्षिणा के और बिना श्रद्धा के किए जाने वाले यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं। देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी जनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा – यह शरीर संबंधी तप कहा जाता है। जो उद्वेग न करने वाला, प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ भाषण है तथा जो वेद–शास्त्रों के पठन का एवं परमेश्वर के नाम–जप का अभ्यास है– वही वाणी संबंधी तप कहा गया है। मन की प्रसन्नता, शांतभाव, भगवच्चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तःकरण के भावों की भलीभाँति पवित्रता, इस प्रकार यह मन संबंधी तप कहा गया

है। फल को न चाहने वाले योगी पुरुषों द्वारा परमश्रद्धा से किए हुए उस पूर्वोक्त तीन प्रकार के तप को सात्विक कहते हैं।

जो तप सत्कार, मान और पूजा के लिए तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिए भी स्वभाव से या पाखण्ड से किया जाता है, वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहलाता है। जो तप मूढतापूर्वक हठ से, मन, वाणी और शरीर को पीढ़ा के सहित अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिए किया जाता है – वह तप तामस कहा गया है।

दान देना ही कर्तव्य है – ऐसे भाव से जो दान–देश तथा काल और पात्र के प्राप्त होने पर उपकार न करने वाले के प्रति दिया जाता है। वह दान सात्विक कहा गया है। किंतु जो दान क्लेशपूर्वक तथा प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल को दृश्टि में रखकर फिर दिया जाता है, वह दान राजस कहलाता है। जो दान बिना सत्कार के अथवा तिरस्कारपूर्वक अयोग्य देश–काल में और कुपात्र के प्रति दिया जाता है, वह दान तामस कहलाता है।

ओ३म् तत् सत् – ऐसे यह तीन प्रकार का सच्चिदानन्द घन ब्रह्म का नाम कहा है, उसी से सृश्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादि रचे गए। इसलिए वेद–मंत्रों का उच्चारण करने वाले श्रेष्ठ पुरुशों की शास्त्रविधि से नियत यज्ञ, दान और तपरूप क्रियाएँ सदा 'ऊँ' इस परमात्मा के नाम को उच्चारण करके ही आरंभ होती हैं।

तत् अर्थात् 'तत्' नाम से कहे जाने वाले परमात्मा का ही यह सब है – इस भाव से फल को न चाहकर नाना प्रकार के यज्ञ, तपरूप क्रियाएँ तथा दानरूप क्रियाएँ कल्याण की इच्छा वाले पुरुषों द्वारा की जाती है।

सत् – इस प्रकार यह परमात्मा का नाम सत्यभाव में और श्रेष्ठ भाव में प्रयोग किया जाता है तथा हे पार्थ! उत्तम कर्म में भी 'सत्' शब्द का प्रयोग किया जाता है तथा यज्ञ, तप और दान में जो स्थिति है, वह भी सत् इस प्रकार कही जाती है। और उस परमात्मा के लिए किया हुआ कर्म निश्चयपूर्वक सत् ऐसा कहा जाता है।

हे अर्जुन! बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान एवं तपा हुआ तप और जो कुछ भी हुआ शुभ कर्म है – वह समस्त 'असत्' इस प्रकार कहा जाता है, इसलिए वह न तो इस लोक में लाभदायक है और न मरने के बाद ही। इस प्रकार अध्याय सत्रह संपूर्ण हुआ।

ऊँ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिशत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्ण–अर्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः।।

SHAPATH

GREEN OLYMPIAD

GREEN Olympiad

Certificate

This is to certify that Sparsh Gupta

a student of NEO CONVENT SENIOR SECONDARY SCHOOL

participated in GREEN Olympiad 2021.

Certificate of Distinction
80%
and above

Vibha Dhawan
Director-General, TERI, New Delhi

RIDDLE TIME

1.You're in a race and you pass the person in second place. What place are you in now?

2.If you have it, you don't share it.
If you share it, you don't have it.

3.A man shaves many times a day during the day, but at the end of the day, he still has a beard.

4.You are in a dark room with a box of matches. Nearby are three things: a candle, an oil lamp and a log of firewood.
What would you light first?

You can send the answers on kanu202021@gmail.com. The first person to send the correct answers will be able to see his name in the next issue of Spectrum.

UNSUNG HERO- SHEKHAR NAIK

Shekhar Naik is an Indian blind cricketer and a former captain of the India national blind cricket team. He captained India to victories at the T20 Blind Cricket World Cup in 2012 and Blind Cricket World Cup in 2014. In 2017, the Government of India awarded Naik with Padma Shri, the country's fourth highest civilian honour. He is a Right-handed batsman and also a wicket-keeper.

Naik was born in a nomadic Banjara family in Arakere in southern Karnataka as the son of a farmer. He was born completely blind, and his mother and 15 members of his family also suffered from visual impairment. Naik injured his head after falling down along the bank of a river when he was seven. He was taken to a health camp organised nearby, and during the treatment the doctors realised the possibility of restoring sight in his right eye. He was subsequently operated upon in Bangalore and was able to get 60% of his vision in his right eye.

His father died soon after, and he was sent to the Shri Sharada Devi School for the Blind in Shimoga. He learnt to play cricket while at the school. He worked in the fields during the summer holidays to fund his cricketing ambitions. His mother died when he was 12. While not playing, he works as a sports coordinator for an NGO called Samarthanam, which funds the Cricket Association for the Blind in India. He has two daughters.

In 2000, he was drafted into the Karnataka team after scoring 136 runs in 46 balls. He was called up into the India national blind cricket team in 2002 and went on to captain the team in 2010. Every team consists of 4 B1 players (completely blind), 3 B2 players (partially blind) and 4 B3 players (partially sighted). Naik is among the B2 players. He was the man of the tournament in the 2006 World Cup. He scored 134 runs in 58 balls against England in the finals, to help the team win the inaugural T20 world cup in 2012. He also led the team to victory in the 2014 Cricket World Cup held in South Africa. In 2017, he became the first Blind cricketer to be awarded the Padma Shri.

ONLINE ACTIVITIES